RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 75, अंक : 49 एक प्रति 2 : रुपये

रविवार 17 फरवरी, 2019

विक्रमी सम्वत् 2075, सृष्टि सम्वत् 1960853119

दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये

आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726

E-mail: apspunjab2010@gmail.com,

www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–75, अंक : 49, 14-17 फरवरी 2019 तदनुसार 5 फाल्गुण, सम्वत् 2075 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

पारिवारिक व्यवहार

ले०-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या।।
अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः।।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शन्तिवाम्।।
मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा।
समयञ्चः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया।।

-ऋ० ३।३०।१-३

शब्दार्थ-वः = तुम्हारे लिए **सहृदयम्** = सहृदयता, एकचित्तता **सांमनस्यम्** = एकामनस्कता=मन के उत्तम भाव तथा **अविद्वेषम्** = निर्वैरता को **कृणोमि** = विहित करता हूँ। **अन्यो अन्यम्** = एक-दूसरे को ऐसा **अभिहर्यत** = चाहो, प्रेम करो **इव** = जैसे **जातम्** = उत्पन्न **वत्सम्** = बछड़े को **अघन्या** = गौ प्यार करती है। **पुत्रः** = पुत्र **पितुः** = पिता के **अनुव्रतः** = अनुव्रत वाला, समान उद्देश्य वाला **भवतु** = हो और **मात्रा** = माँ के साथ **समंनाः** = एक मनवाला हो। **जाया** = पत्नी **पत्ये** = पति के प्रति **मधुमतीम्** = मिठासभरी **शन्तिवाम्** = शान्ति देने वाली **वाचम्** = वाणी को **वदतु** = बोले। **भ्राता** = भाई **भ्रातरम्** = भाई को और **स्वसारम्** = बहिन को **मा** = मत **द्विक्षत्** = द्वेष करे, **उत** = और **स्वसा** = बहिन, भाई और बहिन को **मा** = मत द्वेष करे। **सम्यञ्चः** = एक चाल वाले, **सव्रताः** = एक व्रतवाले **भूत्वा** = होकर **भद्रया** = भली रीति से **वाचम्** = वाणी को **वदत** = तुम बोलो

व्याख्या-राष्ट्र या परिवार के सुख-संविधान की समृद्धि तभी हो सकती है, जब परस्पर प्रीति हो, किसी को किसी से वैर-विरोध न हो। इसके लिए सभी की हार्दिक तथा मानसिक दशा में समता होनी चाहिए, अर्थात् सभी के दिल एक हों, दिमाग़ एक हों और साथ ही दिलों और दिमाग़ों में भी एकता हो। जैसे गौ अपने बछड़े पर प्रेम करती है, वैसा पारस्परिक प्रेम हो!

वेद की उपमाओं में एक निरालापन है, एक अनुपम शान है। प्रेम के लिए गौ को दृष्टान्तरूप में प्रस्तुत किया है। माता-पिता का सन्तान पर अत्यन्त गहरा स्नेह होता है, किन्तु उसमें स्वार्थ की गन्ध होती है, माता-पिता बालक को लाड-चाव से पालते हैं, उनके हृदय में यह भाव होता है कि बुढ़ापे में यह हमारी सेवा करेगा। स्वार्थ का प्रेम स्थायी नहीं रह सकता। स्वार्थ सिद्ध होने पर वह नहीं रह सकता। प्रेम वही स्थिर रहता है जो स्वार्थशून्य हो। इसीलिए वेद ने गौ और बछड़े के प्रेम का दृष्टान्त दिया है। गौ को बछड़े से किसी प्रकार के स्वार्थ की आशा या सम्भावना नहीं है। जिस परिवार या राष्ट्र में ऐसा अद्भुत स्वार्थरहित प्रेम होगा, उसमें सदा ही सुमति तथा सुगति रहेगी।

वेद का अन्तिम उद्देश्य समस्त संसार को एक सूत्र में पिरोना है, सबको प्रेम से अपनाना है। उस विशालता को प्राप्त करने के लिए परिवार तथा राष्ट्र दो सोपान हैं। इस प्रेम का अभ्यास सबसे पहले परिवार में होना चाहिए। परिवार में माता, पिता, पुत्र, भाई, बहिन, पत्नी आदि होते हैं। इन सबमें परस्पर प्रीति स्थिर रखने का उपाय है कि सबका व्रत= उद्देश्य एक हो। पुत्र अपना कर्त्तव्य समझे कि उसे माता-पिता के व्रत=शुभ उद्देश्य पूरे करने हैं। भाई-भाई में, बहिन-बहिन में, भाई-बहिन में, पति-पत्नी में परस्पर प्रीति से घर का सामञ्जस्य बना रह सकता है। **(स्वाध्याय संदोह से साभार)**

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारस्थो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णु रथेष्ठाः सभेयो युवाऽस्य यजमानस्य वीरो जायतां। निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

-यजु० २२.२२

भावार्थ-परमात्मन्! हमारे देश में ब्राह्मण उच्च कोटि के हों। हमारे देश में वीर क्षत्रिय उत्पन्न हों। गौ, घोड़े, बैल हमारे देश में उत्तम हों। समय पर वर्षा की तथा परिपक्व अन्न की प्राप्ति की आवश्यकता को पूर्ण करते हुए आप, हमारे योगक्षेम को भली प्रकार सिद्ध करें।

पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।

-यजु० २९.३९

भावार्थ-हे पतित पावन भगवन्! आपकी कृपा से आपके प्यारे महात्मा सन्तजन, हमें उपदेश देकर पवित्र करें। हमारे विचारपूर्वक किये कर्म भी, हमें पवित्र करें। भगवन्! प्रकृति और इसके कार्य जो चर और अचर भूत हैं, ये सब आपके अधीन हैं, आपकी कृपा से हमें पवित्र होने में ये अनुकूल हैं। आपने हमें सांसारिक और पारमार्थिक सुख देने के लिए चार वेद प्रकट किये हैं, आप कृपा करें कि, उन वेदों का स्वाध्याय करते हुए, हम सब आपके पुत्र अपने लोक और परलोक को सुधारें। यह तब ही हो सकता है, जब आप हमको पवित्र करें। मलिन हृदय से तो न आपकी भक्ति हो सकती है और न ही वेदों का स्वाध्याय, इसीलिए हमारी बारम्बार ऐसी प्रार्थना है कि, 'जातवेदः पुनीहि मा'।

वैदिक धर्म की रक्षक गुरुकुल शिक्षा प्रणाली

ले.-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

वैदिक धर्म सनातन धर्म है। इसका आरम्भ ईश्वर प्रदत्त ज्ञान से हुआ है जिसे वेद कहते हैं। वेद संख्या में चार हैं जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद हैं। इन चार वेदों में ईश्वर ने मनुष्यों को उनके ज्ञान, कर्म व उपासना सहित कर्त्तव्यों की शिक्षा दी है। इसके साथ ही ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति, इन तीन मूल अनादि तत्वों का ज्ञान भी वेदों से होता है। वर्तमान में वेदों के आधार पर ऋषियों द्वारा प्रणीत दर्शन व उपनिषद् आदि अनेक ग्रन्थ उपलब्ध हैं। इनसे भी वेद विषयक अनेक विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है। ऋषि दयानन्द जी का 'सत्यार्थप्रकाश' मुख्य ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में वेदों सहित वेद के अनेक विषयों सम्बन्धित सामग्री उपलब्ध है जिससे वेदों का प्रायः समग्रता से ज्ञान होता है। ऐसा अद्भुत ग्रन्थ इससे पूर्व नहीं लिखा गया। वेद के संस्कृत भाषा में होने तथा इस भाषा की जानकारी न रखने वाले बन्धुओं को वेद का पठन पाठन करने में असुविधा होती है। अतः वेदों पर आधारित तथा वेद की मान्यताओं से युक्त सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ ही वेद सम्मत धर्मग्रन्थ है जिससे मनुष्य को वैदिक धर्म को जानने व पालन में सहायता मिलती है। संसार में अनेक ग्रन्थों को मत-पन्थ-सम्प्रदाय का ग्रन्थ व धर्मग्रन्थ भी कहा जाता है। मत-पन्थों के यह सभी ग्रन्थ मनुष्यों द्वारा रचित हैं और विद्या-अविद्या दोनों से युक्त हैं। अविद्या ही मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है और मनुष्य की सर्वांगीण उन्नति में बाधक है।

यह मान्यता है कि यदि किसी ग्रन्थ में थोड़ी भी अविद्या है तो वह विष के युक्त भोजन के समान त्याज्य है। संसार में वेद ही ऐसे ग्रन्थ हैं जो ईश्वर प्रदत्त ज्ञान होने से अविद्या से सर्वथा मुक्त है। वेद के बाद 6 दर्शन व उपनिषदें वेदानुकूल ऋषिकृत रचनायें हैं। इनका भी अध्ययन व अनुसरण करना लाभप्रद है। ऋषि दयानन्द द्वारा रचित सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ का अध्ययन वैदिक सिद्धान्तों एवं मान्यताओं के अध्ययन में सरलतम एवं सर्वाधिक लाभप्रद है। इसके अध्ययन से वेद, दर्शन एवं उपनिषद की मान्यताओं का भी ज्ञान हो जाता है। ऋषि दयानन्द जी उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में वेदों का यथार्थ ज्ञान रखने वाले सबसे बड़े महापुरुष थे।

उनके ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश की अनेक विशेषताओं में से एक विशेषता यह भी है कि यह लोकभाषा हिन्दी में लिखा गया है। इसे संस्कृत से अपरिचित और केवल देवनागरी के अक्षरों का ज्ञान रखने वाला साधारण मनुष्य भी जान व समझ सकता है। आर्यसमाज का अनुयायी सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन करके सभी मत-पन्थों के अनुयायी व आचार्यों से किसी भी धार्मिक व सामाजिक विषय में वार्तालाप व संवाद कर वैदिक धर्म की श्रेष्ठता को सिद्ध कर सकता है।

वैदिक धर्म एवं संस्कृति के आधार व मूल ग्रन्थ वेद हैं और इतर वेदानुकूल ग्रन्थ उपनिषद, दर्शन, मनुस्मृति, रामायण एवं महाभारत आदि हैं। यह सभी ग्रन्थ संस्कृत भाषा में हैं। अतः वैदिक धर्म का यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने के लिये संस्कृत भाषा का ज्ञान आवश्यक है जिससे वेदों के सत्य अर्थों को जाना जा सके व साधारण लोगों को उसका ज्ञान कराया जा सके। वेदों का ज्ञान कराने के लिये ही सृष्टि के आरम्भ में हमारे ऋषियो ने गुरुकुलों की स्थापना कर युवा स्त्री-पुरुषों वा बालक-बालिकाओं को संस्कृत भाषा, व्याकरण व वेदों के अर्थों का ज्ञान कराया था। समय बीतने के साथ अन्य विद्याओं व विषयों का विस्तृत ज्ञान भी उपलब्ध हुआ। यह समस्त ज्ञान गुरुकुलों में ब्रह्मचारियों को पढ़ाया जाने लगा। प्राचीन काल में गुरुकुलों में पढने वाले संस्कृत के विद्वान, योगी, महात्मा, मुनि व ऋषि बनते थे। वह इस सत्य को जानते थे कि पंचभूतों से बना यह संसार नाशवान है। मनुष्य का शरीर भी पंचभूतों से बना होने से यह भी नाशवान व मृत्यु को प्राप्त होने वाला है। इन तथ्यों को जानने के कारण अधिकांश लोग सम्पन्नतायुक्त सामाजिक जीवन व्यतीत करते हुए भी आध्यात्मिक जीवन पर विशेष ध्यान एवं बल देते थे। इसी कारण हमारा धर्म व संस्कृति पूरे विश्व में पढ़ी व जानी जाती थी तथा विश्व भर के लोग वेद और ऋषियों से प्रेरणा लेते थे। सत्यार्थप्रकाश में इससे जुड़े तथ्यों का दिग्दर्शन वा संकेत किया गया है। महाभारतकाल तक वेद व संस्कृत भाषा का विश्व भर में प्रचार था। संसार में वेद व उपनिषदों आदि के ग्रन्थों के अतिरिक्त धर्म विषयक अध्ययन का अन्य कोई ग्रन्थ नहीं था। महाभारत युद्ध के बाद ज्ञान विज्ञान का पतन हुआ और देश विदेश में वेदों का प्रचार व प्रसार बन्द हो गया। इसके परिणामस्वरुप ही विश्व में अनेक अवैदिक मतों का विभिन्न पुरुषों द्वारा आविर्भाव हुआ। इन्हें ईश्वर का पुत्र व सन्देशवाहक भी कहा जाता है। आर्यसमाज शब्दों के अर्थों के अनुरुप व वैदिक ज्ञान के आधार पर विभिन्न विषयों का निर्णय करता है। उसके अनुसार समस्त जीवात्मायें, मनुष्य आदि प्राणी व जीव-जन्तु ईश्वर के पुत्र व पुत्रियां ही हैं। जो मनुष्य ज्ञान प्राप्त कर ईश्वर के वेद के सन्देश का प्रचार प्रसार करता है जैसा कि हमारे ऋषियों, विद्वानों, ऋषि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम जी, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी आदि ने किया, इससे यह लोग भी ईश्वर के सन्देशवाहक ही हैं। वर्तमान में भी जो वैदिक विद्वान वेदों के सन्देश का जन-जन में प्रचार कर रहे हैं, वह भी ईश्वर के सन्देश का प्रचार करने वाले व ईश्वर के सन्देशवाहक कहे व माने जा सकते हैं। आज परिस्थितियां ऐसी हैं कि वेदमत का प्रचार कम व मत-पन्थों का प्रचार अधिक है।

ऋषि दयानन्द जी ने एक नियम दिया है कि अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये। अविद्या का अर्थ मत-पन्थों में निहित अविद्या भ सम्मिलित है। अतः इस अविद्या का निराकरण वेद व उसकी मान्यताओं का युक्ति, तर्क, प्रमाण, शास्त्रार्थ, चर्चा व संवाद आदि के द्वारा प्रचार कर ही किया जा सकता है। इसके साथ ही वेदों का ज्ञान मूलसंहिताओं एवं अर्थ सहित सुरक्षित रहे, इसकी भी आवश्यकता है। इस कार्य को सम्पादित करने के लिये गुरुकुलों की आवश्यकता है जो वेद व वैदिक संस्कृत भाषा का व्याकरण सहित अध्ययन व अध्यापन करायें। इन गुरुकुलों का उद्देश्य संस्कृत व वेद के विद्वान उत्पन्न करना ही हो सकता है जिससे वेदों के सत्यार्थ, वेदों के सत्य रहस्य, ईश्वर-जीवात्मा-प्रकृति विषयक ज्ञान, मनुष्य के कर्तव्यों से सम्बन्धित ज्ञान व कर्मकाण्ड विषयक जानकारी सामान्य जनता तक पहुंचती रहे।

गुरुकुलीय शिक्षा पर विचार करते हैं तो हमें गुरुकुल वही प्रतीत होता है कि जहां ऋषि दयानन्द समर्थित आर्ष व्याकरण पाणिनी-अष्टाध्यायी-महाभाष्य का अध्ययन कर ब्रह्मचारी वेदमन्त्रों के अर्थ करने योग्यता व दक्षता से सम्पन्न हो। यदि कोई विद्यार्थी किसी गुरुकुल में पढ़कर स्नातक बनता है तो उसमें वेद, उपनिषद, दर्शन, मनुस्मृति, रामायण व महाभारत के श्लोकों का बिना टीकाओं व भाष्यों के अध्ययन व प्रचार करने की योग्यता होनी चाहिये। हम जानते हैं कि हमारे सभी गुरुकुल अपने विद्यार्थियों को इस स्थिति तक नहीं ले जा पाते। इसमें गुरुकुल के विद्यार्थियों की भी इस स्तर का व्याकरणाचार्य न बनने की भावना व संकल्प का अभाव भी मुख्य होता है। अतः गुरुकुल के विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा की व्याकरण का आचार्य तो बनना ही चाहिये जिससे वह अन्य विद्यार्थियों को पढ़ा सके और उन्हें वेदों व वैदिक साहित्य का उत्तम विद्वान बना सके। यदि हमारे गुरुकुल अपने गुरुकुलों में व्याकरणाचार्य तैयार कर रहे हैं तो वह निश्चय ही प्रशंसा के पात्र है। आर्यजगत को ऐसे गुरुकुलों की भरपूर सहायता एवं सहयोग करना चाहिये।

ऐसे गुरुकुलों में विद्यार्थियों की संख्या अन्य शिक्षण संस्थाओं व गुरुकुलों से भले ही कम हो, परन्तु व्याकरण के आचार्य विद्वानों का आर्यसमाज में होना वेद की रक्षा व प्रचार के लिये आवश्यक है। यदि ऐसा नहीं होगा तो भविष्य में गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली शिथिल व अव्यवस्थित हो सकती है। अतः आर्यसमाजों को संस्कृत के उच्च कोटि के विद्वानों व व्याकरणों के

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

बसन्त पंचमी का पर्व एवं वीर हकीकत राय बलिदान दिवस

है ऋतुराज का आगमन, जल-थल में छवि आई है।
प्रकृति देवी नवल रंग में रंगमञ्च पर आई है।।
विरस द्रुमों ने नवल दलों से निज श्रृंगार बनाया है।
मानो श्रीवसन्त स्वागत हित रूचि वितान बनाया है।।
कुसुमभार का हार पहनकर मतवाले से झूम रहे।
कभी-कभी वे अनुरागवश अवनि-चरण को चूम रहे।।
सरल रसाल साल में मञ्जुल पीतमञ्जरी आई है।
सरसों सुमन पीत भूतल में पीताम्बर छवि-छाई है।।
चित्र विचित्र वेश-भूषा में चित्रित मन हो जाता है।
नीरस हृदयों में सहसा ही, प्रेम बीज बो जाता है।।
श्री ऋतुराज राज की लक्ष्मी नये ढंग से आती है।
श्रीहरि विश्व-रंगशाला में नये ढंग से दिखलाती है।।

-कवि शिरोमणि श्रीहरि

कवि द्वारा कही गई निम्न पंक्तियां बसन्त पञ्चमी के पर्व पर पूर्ण रूपेण चरितार्थ होती हैं। बसन्त पञ्चमी का पर्व जहां प्रकृति के अन्दर नई हलचल उत्पन्न करता है वहीं हमारे जीवन में भी नया उत्साह और प्रेरणा लेकर आता है। बसन्त के आने पर हमारे चारों ओर प्रकृति हरी-भरी हो जाती है। बसन्त ऋतु के आगमन से जहां दीन दु:खी जन को साहस मिलता है कि हमारा जीवन सकुशल रहेगा, उसके साथ ही प्रकृति में अतुलनीय शोभा का विकास होता है। समस्त भूमि पीली चादर ओढ़े अपनी मन्द सुगन्ध समीर से जन मानस को आह्लादित कर देती है। वनस्पति जगत में सर्वत्र नवीन परिवर्तन होता दिखाई देता है। बसन्त पंचमी के पर्व का समय ऐसा आनन्द और उत्साह देने वाला होता है कि वायुमण्ड़ल मोद और मद से भर जाता है। दिशाएं कलकण्ठा कोकिला आदि विविध विहंगमों के मधुर आलाप से प्रतिध्वनित हो उठती हैं। क्या पशु, क्या पक्षी और क्या मनुष्य सबका हृदय आनन्द से उद्वेलित होने लगता है। मनों में नई-नई उमंगें उठने लगती हैं। भारत के अन्नदाता किसान अपने दिन रात के परिश्रम को आषाढ़ी फसल के रूप में देखकर फूले नहीं समाते हैं। उनके गेहूं और जौ के खेतों की नवाविर्भूत बालों से युक्त लहलहाती हरियाली उनकी आँखों को तरावट तथा चित्त को अपूर्व आनन्द देती है। कृषि के सब कार्य इस समय समाप्त हो जाते हैं।

बसन्त पंचमी का पर्व सम्पूर्ण प्राणी जगत को प्रेरित करता है कि जिस प्रकार बसन्तागमन से सम्पूर्ण प्रकृति अपने स्वरूप को बदल देती है, प्रकृति का स्वरूप परिवर्तित दिखाई देता है, चारों ओर फूल खिलने लगते हैं, उसी प्रकार परमपिता परमात्मा की सर्वोत्तम कृति मनुष्य के अन्दर भी परिवर्तन होना चाहिए। यह परिवर्तन उसके जीवन के उत्थान के लिए होना चाहिए, अच्छे गुणों को धारण करने का होना चाहिए, समाज सेवा का संकल्प लेने का होना चाहिए। जब यह परिवर्तन मनुष्य के जीवन में आता है तो उसका जीवन भी प्रकृति की तरह खिलने लगता है, उसके जीवन से भी फूलों की तरह सुगन्धि आने लगती है और उसका मनुष्यत्व सार्थक होता है। चेतन प्राणी होने के नाते मनुष्य का यह कर्त्तव्य है कि वह अपने जीवन के उद्देश्य को समझे और उसकी प्राप्ति के लिए श्रेष्ठ कर्म करता रहे। मनुष्य जीवन में भी परिवर्तन होना चाहिए। हमारे जीवन में भी आनन्द और उत्साह का संचार होना चाहिए। अपनी कमियों और त्रुटियों को दूर करके उसमें सद्गुणों का संचार करना चाहिए। अगर जड़ प्रकृति ऋतुओं के अनुसार अपने में परिवर्तन कर सकती है तो हम तो चेतन प्राणी हैं। हम चेतन होकर भी अगर अपने अन्दर परिवर्तन नहीं करते, बदलाव नहीं लाते तो हमारा चेतन होने का क्या लाभ?

बसन्त पंचमी का दिन जहां ऋतु परिवर्तन की दृष्टि से अपना महत्व रखता है वहां अपने साथ एक महा बलिदानी, धर्मनिष्ठ वीर की याद ताजा कर देता है। इस बलिदानी वीर का नाम हकीकत राय था, जिसने अपनी 14 वर्ष की अल्प आयु में जीवन की हकीकत को समझा था। वीर हकीकत के जीवन चरित्र को पढ़ने से यह प्रेरणा मिलती है कि हमें अपने पूर्वजों के यशस्वी जीवन की प्राणपन से रक्षा करनी चाहिए। किसी में सह साहस न हो कि हमारे पूर्वजों का अपमान कर सके या हमारे धार्मिक सिद्धान्तों की खिल्ली उड़ा सके। आयु की दृष्टि से वीर हकीकत छोटे थे परन्तु अपने धर्म के प्रति उत्सर्ग का ऊंचा भाव निज बलिदान द्वारा जो प्रस्तुत किया वह किसी भी स्वाभिमानी व्यक्ति के लिए अत्यन्त प्रेरणा देने वाला है। वीर हकीकत को डराया गया, धमकाया गया, प्रलोभन दिए गए, अपना धर्म छोड़ने के लिए मजबूर करने की कोशिश की गई परन्तु वीर हकीकत उनके भय और प्रलोभन के जरा भी विचलित नहीं हुए। अपना धर्म परिवर्तन करके प्राणों को बचाने की कोई इच्छा प्रकट नहीं की। धर्म पर बलिदान होने वाले ही धर्म के सच्चे प्रेमी और प्रचारक होते हैं, यह वीर हकीकत ने अपने बलिदान से सिद्ध कर दिया। 14 वर्ष की छोटी आयु होने पर भी जो भाव और श्रद्धा वीर हकीकत के अन्दर थी वह सचमुच प्रेरणादायक है। वीर हकीकत ने गीता के वचनों को सार्थक कर दिया कि। **स्वधर्मे निधनं श्रेय: परधर्मो भयावह:।।** अर्थात् अपने धर्म के लिए मर मिटना भी कल्याणकारी होता है, दूसरों के धर्म को अपनाकर हम सुख और शान्ति को प्राप्त नहीं कर सकते। आज हम थोड़े से भय और प्रलोभन के वशीभूत होकर अपने धर्म को तिलांजलि दे देते हैं। बसन्त पंचमी का पर्व हमें वीर हकीकत के गुणों को अपनाने की प्रेरणा देता है। वीर हकीकत ने अपने बलिदान से हमारा मार्गदर्शन किया है कि चाहे कितने ही कष्ट सहने पड़े, कितनी मुसीबतें सहन करनी पड़े हम अपने मार्ग से, अपने कर्त्तव्य से, अपने धर्म से कभी भी मुंह न मोड़े।

बसन्त पंचमी के पर्व और धर्मवीर बाल हकीकत राय के जीवन से प्रेरणा लेते हुए हम भी अपने अन्दर आनन्द, उत्साह, अपने धर्म के प्रति उत्सर्ग की भावना और नई ऊर्जा का संचार करें। प्रकृति के साथ-साथ अपने जीवन में भी परिवर्तन करें। पर्वों के द्वारा हमारे अन्दर नई प्रेरणा तथा उत्साह पैदा होता है। पर्वों के बिना हमारा जीवन नीरस हो जाता है। नीरस जीवन को सरस बनाने के लिए हम सभी मिलजुल कर आनन्द और उत्साह के साथ अपने पर्वों को मनाएं। बसन्त पंचमी का पर्व भी ऐसा ही प्रेरणादायक तथा आनन्द और उत्साह को बढ़ाने वाला पर्व है। इस पर्व को मनाते हुए हम जहां प्रकृति के अनुसार अपने जीवन में परिवर्तन करें वहीं वीर हकीकत राय के गुणों को धारण करके अपनी संस्कृति, सभ्यता और धर्म की रक्षा करें।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

स्वास्थ्य चर्चा

घरेलू उपचार

ले.-स्वामी शिवानन्द सरस्वती

(गतांक से आगे)

वाँढ ककोरे की जड़ का लेप करें।

स्तनों में दूध की कमी के लिए-सतावर बूटी का चूर्ण फाँककर ऊपर से मिश्री मिला हुआ दूध गाय का पियें। मात्रा ५ ग्राम सुबह शाम।

सिर पैर हाथों में जलन-1. छोटी दुद्धी ५ ग्राम, मिश्री २० ग्राम पीसकर शर्बत बना के पियें।

सर्व प्रमेह हरण-१. सत्यानाशी कटेर पले फूल वाली की जड़ २५ ग्राम, काली मिर्च १० ग्राम कूटकर गोली बना लें। २ गोली प्रात: सायं खायें।

सूजन-१. शरीर के किसी भाग में सूजन हो, तुलसी के पत्ते पीस कर लेपन करें। लाभ होगा।

२. ढाक (छौला, पलाश) के फूल पीस कर पानी में घोंटकर लेप करें।

२. आमला ५० ग्राम गूदा सूखा हुआ कूट पीस छान कर चूर्ण बना लें उसमें ५० ग्राम मिश्री मिलाकर शीशी में रख लें। प्रात: सांय ५ ग्राम जल के साथ सेवन करें।

सर्प विष-१. आक की कोंपल ३ रोगी को चबाने के लिए दें। उससे विष दूर होगा।

२. ओंघा के पत्ते पीसकर जिस जगह काटा है वहाँ लेप करें।

ओंघा के पत्ते पीस घोंट कर पिलायें। इससे विच्छू का काटा भी ठीक होता है।

सर्व रोग हरण (सोंठ कल्प)-१. सोंठ बढ़िया २ किलो लेकर कूट पीस छानकर १ किलो घृत और आधा किलो गुड़, थोड़ी गाय की छाछ मिलाकर खूब मलें। फिर चिकने मिट्टी के बर्तन में रखकर उस बर्तन को कपड़े मिट्टी कर दें। सूखने पर धान के भीतर दवा दें। १ माह पश्चात निकाल लें। २० ग्राम दवा प्रति दिन खायें ६ माह में सर्व रोग नष्ट हो जाते हैं।

२. निर्गुण्डी कल्प-निर्गुण्डी की जड़ का चूर्ण ३२० ग्राम शहद ६४० ग्राम दोनों को मिला कर घी से चिकनी हाँडी में भर दें। फिर सन्धियों में (जोड़ों) में बंद करके एक मास तक अनाज में दवा दें। १ माह बाद निकाल कर १० ग्राम दवा प्रात: सायं खायें। इसके सेवन से मनुष्य रोग रहित होकर स्वस्थ जीवन जीता है।

सिर का भारीपन-सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल तीनों सम भाग लेकर कूट पीस छानकर चूर्ण कर लें। चौ गुना गुड़ मिलाकर बेर के बराबर गोलियां बना लें। १-१ गोली तीन बार ताजा पानी से लें। सिर का भारीपन, कफ, जुकाम ठीक हो जाता है।

सीने की जलन-२०० ग्राम पानी में नींबू निचोड़ कर पीने से सीने की जलन और घबराहट दूर होती है।

सुरीली आवाज-छोटी पीपल ५ दाने ५०० ग्राम दूध में इतना गर्म करें कि पीपलें नर्म हो जाए। फिर पीपलों को निकाल कर खालें। दूध में मिश्री मिलाकर पियें। अगले दिन ३ पीपलें बढ़ा दें और ८ दिन तक निरन्तर ३-३ पीपल बढ़ाते रहे। नवें दिन ३-३ पीपलें घटाते जाए, यहाँ तक कि ५ पीपल पर आ जायें। इसके सेवन से पुराने बुखार, खाँसी, श्वाँस, दमा क्षय, हिचकी, विषम ज्वर, आवाज बिगड़न। बवासीर, पेट का वायु गोला, जुकाम आदि रोग दूर होते हैं। आवाज सुरीली होती है। तिल्ली दूर होती है, पीलिया के लिए रामबाण औषधि है।

सूखा रोग-१. अति वलार कंघी, खरेंटी की ताज़ा पत्तियाँ को सिल वट्टे पर पीसकर एक इंच की गोल टिकिया बना लें। फिर इसके बराबर गुड़ की भी टिकिया बना लें। जिस बच्चे को सूखा रोग हो, उसके तालु पर गुड़ की टिकिया रखें फिर इस टिकिया पर अतिवला की टिकिया रखें। इसके ऊपर रूई का फाया रखकर पट्टी बाँध दें। जिससे दवा फैले नहीं, सरके नहीं, यह दवा रात को सोते समय बाधें। प्रात: गुज़ लुप्त हो जायेगा अतिबला की टिकिया अपनी जगह पर मिलेगी। जब तक गुड़ लुप्त होता रहे तब तक प्रयोग करें। अतिवला की प्रतिदिन नई टिकिया बनायें। बच्चा स्वस्थ होता जायेगा।

२. मीठे नीम के पत्तों का रस तिल तेल में मिलाकर मालिश करें।

३. २० ग्राम गधी का दूध बच्चे को पिलायें। सूखा रोग दूर होगा।

४. गूलर का दूध ३ बूंद बताशे में रखकर बच्चों को सूर्योदय से पहले खिलायें। बच्चा मोटा होता जायेगा।

५. नीम गिलोय के रस में कपड़े रंग कर बच्चे को पहनायें। गिलोय का रस शहद में मिलाकर चटायें। ३ ग्राम सुबह शाम।

६. काली गाय का मूत्र सूर्योदय से पहले लाकर १० ग्राम केशर असली भिगोकर खरल कर शीशी में रख लें। छानकर। ६ माह के बालक को ४ बूंद ६ से ज्यादा आयु के बालक को ८ बूंद माता के दूध से प्रात: सायं दें। अति लाभप्रद है।

सूर्यावर्त्त-सूर्योदय के बाद होने वाला दर्द-१. धनियाँ सूखा ५ ग्राम उस्तेखद्दस ५ ग्राम काली मिर्च ६ दाने। प्रात: सूर्योदय से पहले तीनों वस्तुओं को पानी के साथ घोंट पीस छान कर बिना मीठा डालें पियें। बाद १-२ बताशे खा लें। अनुभूत योग है। पहले ही दिन सिर दर्द बन्द हो जायेगा।

सुजाक-केले की जड़ (कुम्भे) से २५० ग्राम रस निकाल थोड़ी सी मिश्री मिलाकर पीने से सुजाक रोग दूर होता है।

२. सत्यानाशी कटेरी के बीज ५ ग्राम पीसकर पिलायें।

सौन्दर्य वर्धक-नीम के पत्ते, हरड़ की छाल, लोभ, अनार के पौधे की छाल, आम की छाल प्रत्येक ५-५ ग्राम पानी में पीसकर शरीर पर उबटन करें। कुछ दिनों में ही कुरूपता नष्ट होकर शरीर सुन्दर हो जायेगा।

२. सरसों को दूध में पीस लें। इस लेप की प्रतिदिन सोते समय मुख पर लेपन करें। इसके प्रयोग। इसके प्रयोग से चेहरे के काले धब्बे दूर होंगे मुख सुन्दर होकर खिल उठेगा। १५ दिन प्रयोग करें। स्त्री सौन्दर्य के लिये लाभ प्रद है।

संग्रणी-१.२० ग्राम सुगन्ध वाला २०० ग्राम पानी में औटायें जब चौथाई रह जाये तब ठन्डा कर छान कर पियें। १ सप्ताह में रोग से मुक्ति मिल जायेगी।

२. झोझरू के पत्ते ५० ग्राम २०० ग्राम पानी में उबालें काढ़ा करके ठन्डा होने पर ठान कर सोंठ का चूर्ण ५ ग्राम फांक कर ऊपर से पियें। रोग दूर होगा। १ माह सेवन करें।

शरीर के किसी भाग से खून निकलता हो-१. नाग केशर घी में भूलकर उसमें चीनी मिला लें। उसका सेवन करें। (पैर कटने) के रोग पर रामबाण है।

स्वप्न दोष-१. वंग भस्म आधा ग्राम सत्व गिलोय २ ग्राम दोनों को मिलाकर प्रात: सायं सेवन करें।

२. सिरस के बीज और मिश्री तीनों सम भाग लेकर कूट पीस चूर्ण बना छान कर शीशी में रख लें। प्रतिदिन ५ ग्राम गौ दुग्ध धारोष्ण से पियें। अद्वितीय औषधि है।

३. भिण्डी की जड़ कोमल छाया में धोकर सुखा लें। फिर बारीक पीस कपड़ छन कर समभाग मिश्री मिला शीशी में रख लें। १० ग्राम दबा बकरी या गाय के दूध के साथ सेवन करें। प्रात: सायं १ माह प्रयोग करें।

शक्ति वर्धक-१. १० ग्राम अखरोट ५ बादाम की गिरी १० मुनक्का बीज निकाल कर खायें ऊपर से दूध पियें।

२. दूध ठन्डा करके शहद ५ ग्राम डाल कर पियें। बच्चों बुढ्ढों को विशेष लाभ प्रद है।

सुर्मा ढलका रोग के लिए-१. काला नमक, काली मिर्च १०-१० ग्राम पीपल छोटी २० ग्राम समुद्र फेन ५ ग्रफाम सुरमा काला ६० ग्राम सबको खरल कर घोंट कर शीशी में भर लें। सुर्मा तैयार है। सिलाई से आँखों में लगायें ढलका दूर होता है। खुजली मिटती है आँखों की रोशनी बढ़ती है।

नेत्र ज्योति के लिए-आक के दूध में बत्ती बनाकर सात दिन भिगो कर छाया में रखें सूखने पर नित्य आक दूध डालते जाँय। १ सप्ताह बाद गौ घृत का दीपक बना काजल पारें। काजल को खुर्च कर शीशी में रख लें। सुर्मा तैयार है।

हृदय रोग-१. किशमिश १० ग्राम दूध में गर्म करें उन्हें खाकर ऊपर से दूध पियें।

२. पीपल, चव्य, चित्रक, सोंठ का चूर्ण कपड़ छन कर छाछ के साथ पियें। छाछ गाय की हो। अति लाभप्रद है।

हकलाना-१. तेज पत्र को जिह्वा के नीचे रखने से हकलाना (रुक-२ कर बोलना) बंद होता है।

२. सुहागा फूला हुआ शहद में मिलाकर जीभ पर मलें।

हड्डी टूटना १. शुद्ध शिला जीत १ ग्राम से ३ ग्राम तक प्रति-दिन गौ दुग्ध से पियें। इससे टूटी हड्डी जुड़ जाती है।

२. पीपल के कोमल पत्ते २१ लेकर खूब पीसकर गुड़ मिलाकर २१ गोली बनायें। प्रतिदिन ३ गोली गौ दुग्ध के साथ खायें, ऊपर से दूध पियें।

३. महुआ की छाल ताजा लेकर उसे पानी के साथ पीस घोंट टूटी हुई हड्डी पर बाधें। हड्डी जुड़ जाती है। १ सप्ताह प्रयोग करें।

(क्रमशः)

वेद मार्ग—आर्य मार्ग

ले.-निर्मल कौशिक 163 आदर्श नगर, ओल्ड कैंटरोड फरीदकोट-पंजाब

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी जैसे महान व्यक्तित्व के सन्मार्ग पर चलते हुए अनेक अनुयायियों ने अपना जीवन सफल किया है। उनका जीवन मानव समाज को अनुशासन, मर्यादा, संयम परोपकार, त्याग, भ्रातृभाव स्नेह और सौहार्द जैसे मानवीय गुणों को धारण करने के लिए प्रेरित करता है। उनके द्वारा रचा गया सद् साहित्य मानव मन में वैदिक संस्कृति, यज्ञ परम्परा, संस्कार, राष्ट्र प्रेम और विश्व बन्धुत्व जैसी भावनाओं को उजागर करता है। समाजों द्वारा कुरीतियों का निराकरण करते हुए स्वामी जी ने आर्य समाज की स्थापना की। उनका उद्देश्य था। आर्य समाज आर्य-श्रेष्ठ लोगों का समुदाय ही आर्य समाज बन सकेगा। इसी से कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का स्वप्न साकार हो सकेगा। गीता में भगवान श्री कृष्ण कहते हैं।

यद्यादाचरति श्रेष्ठस्तत् देवेतरो जना:
स यत प्रमाण कुरुते लोकस्त-
तनुथर्तते।।

अर्थात् श्रेष्ठ पुरुष जो कुछ करते है लोग उनका अनुसरण करते हैं। उनके कार्य लोगों के लिए प्रमाण बन जाते है। यही श्रेष्ठ पुरुष की पहचान होती है।

श्रेष्ठ पुरुष श्रेष्ठ अर्थात् अच्छे विचारों से बनते है। विचार हमारे कृत्यों को प्रेरित करते है। सद्विचार सद्साहित्य से प्राप्त होते है। सद्साहित्य से ही हम अपनी बुद्धि को प्रकाशित करते हैं। हमारे दुर्गुण, दुर्विचार, दुष्कर्म दूर होते हैं। हम ईश्वर से भी यही प्रार्थना करते है।

विश्वानि देव सवितुर्दुरितानि परासुव यदभद्र तन्नासुव।

अर्थात् हे ईश्वर हमारे बुरे विचारों को दूर कर हमारे लिए शुद्ध अच्छे विचार प्रदान करें।

आर्य समाज की स्थापना कर स्वामी जी ने वैदिक परम्पराओं और वैदिक संस्कृति के विभिन्न पक्षों को समाजोत्थान हेतु दिनचर्या में सम्मिलित किया। श्रद्धाभाव से वैदिक सन्ध्या करना 'यज्ञ' कर्म करने से वातावरण की शुद्धता में योगदान देना तथा योगादि से स्वास्थ्य का ध्यान रखना। सत् चरित्र के लिए महान पुरुषों का अनुसरण करना। वेदों का अध्ययन करना आदि कुछ बातों को धारण करने पर बल दिया। उन्होंने वेद विद्या को अपने जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान दिया। कहा भी गया है।

वेदा सर्वविद्यानाम् निधानं खलु अर्थात् वेद सभी विद्याओं के भण्डार हैं।

हम ईश्वर से प्रार्थना करते है हे प्रभु हमें अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो। असत्य से सत्य की ओर ले चले मृत्यु से अमरत्व की ओर ले चलो।

तमसो मा ज्योतिर्गमय
असतो मा सद्गमय
मृत्यो मा अमृतंगमय

वेद विद्या हमें अमरत्व प्रदान करती है। वेद हमें जीवन जीने की कला सिखाते है। दुर्गुणों से दूर रह कर सद्गुण कैसे धारण करें। श्रेष्ठ मानव कैसे बने, चरित्रवान् कैसे बने। यह सब वेद हमारा मार्ग दर्शन करते है। विद्यावान् (विद्वान) की सब जगह पूजा वन्दना, स्तुति होती है। राजा केवल अपने राज्य में पूजा जाता है विद्वान सर्वत्र (विश्व) में पूजा जाता है। कहा भी है।

राजा पूज्यते स्वदेशे-विद्वान सर्वत्र पूज्यते 'विद्या' (ज्ञान) के विषय में वेद वाक्यों में भी विद्या का महत्त्व बताया गया है।

सा विद्या या विमुक्तये-विद्या वह है जो अज्ञानता से मुक्त करती है। अज्ञानता के कारण ही मनुष्य अपने जीवन का लक्ष्य भटक जाता है। ज्ञान के अभाव में अन्धकार छा जाता है अत: अज्ञानता के कारण हमें जीवन का लक्ष्य दिखाई नहीं देता। वेद हमें ज्ञान का प्रकाश दिखा कर-मार्ग दिखता है तभी हम लक्ष्य को पाने में सक्षम हो पाते है। वरन् हम यूं ही जीवन भर भटकते रहेंगे और जीवन व्यर्थ ही चला जाएगा। वेद ईश्वर वाक्य है। ईश्वर की प्रेरणा है ईश्वर की शक्ति है। सत् चित आनन्द स्वरूप ईश्वर से हम 'गायत्री महामन्त्र के माध्यम से यही प्रार्थना करते है कि हे-सत् चित आनन्द स्वरूप प्रभु हम जिसका ध्यान करते है वह हमारी बुद्धि को प्रकाशित करे। इस प्रार्थना का फल हमें वेदवाणी प्रदान करती है। वही हमारी बुद्धियों को प्रकाशित करती है। वेदाध्ययन से दिव्यता प्राप्त होती है। वेद हमें अलौकिक शक्ति प्रदान करते है। स्वामी दयानन्द जी ने इसे प्रमाणित किया। मानवता के उद्धार के लिए। समाज सुधारक के रूप में अद्भुत परिवर्तन किये। भारतीय संस्कृति को पुन: स्थापित करने हेतु वैदिक परम्पराओं और जीवन मूल्यों की स्थापना की।'

'वैदिक सन्ध्या-यज्ञ परम्परा से आत्मिक और भौतिक शुद्धि का अमर सन्देश प्रसारित किया।' 1875 में आर्य समाज की स्थापना कर एक नए श्रेष्ठ समुदाय की सरंचना की। आपके आदर्शों और सिद्धान्तों को अपना कर अनेक परिवार लाभान्वित हुए है और हो रहे हैं। अगर आर्य समाज से जुड़ी संस्थाएं स्वामी दयानन्द जी के सन्देश और उपदेश को और अधिक सुचारू ढंग से समाज में प्रस्तुत करें तो निस्सन्देह स्वामी जी का कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का स्वप्न निश्चित रूप से साकार होगा। आर्य समाज एक दिन 'आर्यवर्त्त' का नाम सार्थक करने में सक्षम होगा भारत की खोई-हुई-संस्कृति, पुन: स्थापित होगी। भारत का विश्व भर में गौरवगान होगा। हमें आडम्बरों का खण्डन कर मानव मूल्यों को अपना कर सत्य के मार्ग पर चल कर जीवन को सार्थक करने के लिए 'आर्य समाज' के उत्थान के लिए यथाशक्ति अपनी भूमिका निभानी होगी। तभी मानव का कल्याण होगा। भारत का उत्थान होगा। तभी वसुधैव कुटुम्बकम् का स्वप्न भी साकार होगा।

स्वामी दयानन्द जी के जन्म दिवस पर नवांशहर में 1 मार्च को अन्त: महाविद्यालय प्रतियोगिता

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में आर्य समाज नवांशहर द्वारा आर.के.आर्य कालेज नवांशहर में 1 मार्च 2019 को महर्षि दयानन्द जी सरस्वती का जन्म दिवस वैदिक दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी करेंगे। इस अवसर पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन भी किया जाएगा जिसमें सभा के अधीन चल रहे महाविद्यालयों के विद्यार्थी भाग लेंगे। इस अवसर पर विजेता टीम को पंडित हरबंस लाल जी स्मृति चिन्ह के रूप में रनिंग ट्राफी भी प्रदान की जाएगी। इस भाषण प्रतियोगिता में प्रथम आने वाले विद्यार्थी को 5100 रुपये की नकद राशि प्रदान की जाएगी जबकि द्वितीय आने वाले विद्यार्थी को 3100 रुपये और तृतीय स्थान पर आने वाले विद्यार्थी को 2100 रुपये की नकद राशि प्रदान की जाएगी।

आर्य समाज में हवन कर जन्म दिवस मनाया

आर्य समाज मंदिर गुरुकुल विभाग फिरोजपुर शहर में साप्ताहिक सत्संग में श्री सर्व हितैषी भाटिया जी ने अपना जन्म दिवस यज्ञ करके मनाया। श्री सर्वहितैषी भाटिया तथा उनकी पत्नी श्रीमती अनीता भाटियाने संयुक्त रूप से वैदिक मंत्रों के साथ बड़ी ही श्रद्धापूर्वक यज्ञ किया तथा आए हुये शेष सदस्यों ने यज्ञ में आहुतियां प्रदान की। श्री सर्व हितैषी भाटिया तथा उनका समस्त परिवार बचपन से ही आर्य समाज से जुड़ा हुआ है। इस अवसर पर पूरा सत्संग हाल भरा हुआ था। सभी ने यज्ञ उपरान्त श्री सर्व हितैषी भाटिया तथा अनीता भाटिया जी को आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर श्री डी.आर. गोयल तथा श्री वेद प्रकाश बजाज ने वैदिक भजन प्रस्तुत किये जिसे उपस्थित आर्यजनों ने बहुत सराहा। इस अवसर पर संकल्प लिया गया कि हमें जन्म दिवस पर फिजूलखर्ची कम करके सादे ढंग से मनाना चाहिये। इस अवसर पर श्री सुमेर ढींगरा, सुरिन्द्र वोहरा, श्री शांतिभूषण शर्मा, श्री राजीव गुलाटी, श्री राम दर्शन जी, श्रीमती छाबड़ा, साज्ञी, कुलदीप मैनी तथा बहुत से सदस्य उपस्थित थे। **मेहता संरक्षक**

परमात्मा का स्वरूप

ले.-डॉ. सुशील वर्मा, फाजिल्का

संसार में अधिकतर मनुष्य ईश्वर को मानते हैं उस पर विश्वास भी करते हैं। बहुत कम ऐसे हैं जो ईश्वर की सत्ता को स्वीकार तो नहीं करते परन्तु अन्य रूप में चाहे उसे प्रकृति का नाम दें चाहे स्वचलित संसार कहें आदि स्वरूप को मान्यता देते है। अब जो उसकी सत्ता को स्वीकार करते हैं, उन का परमात्मा अपना अपना है। कहने को तो सभी कहते हैं, परमात्मा, अल्ला, खुदा, गॉड सब एक हैं परन्तु हर मत सम्प्रदाय को मानने वालों ने अपना अपना परमात्मा बना रखा है और उनके लिए वही परमात्मा है। मनुष्य ने परमात्मा को अपने जैसा ही महामानव बना रखा है। अब उसके गुण जो छोटे रूप में मनुष्य में होते हैं वही बड़े रूप में ईश्वर के। कहने का तात्पर्य ईश्वर नरों में श्रेष्ठतर है। उसकी मूर्तियाँ अथवा चित्र वैसे ही है जैसा कि मनुष्य की शक्ल। विशेषता के लिए दो हाथों के स्थान पर चार हाथ, दो आखों के स्थान पर तीन आँखे माथे पर तिलक के स्थान पर चन्द्रमा की आकृति। कहीं कहीं तो सारा शरीर नर का परन्तु मुँह शेर का। किसी को पँचमुखी, तो किसी की सवारी सिंह की, किसी की चूहे की। और जो बुतपरस्ती को नहीं मानते, उनके लिए जैसे बड़े पुरुष बड़े बड़े स्थानों पर रहते हैं उसी प्रकार उनके लिए चौथे आसमान पर अन्यथा सातवें आसमान पर। बड़ा शासक होने से उसका राज दरबार भी बड़ा। शासन की व्यवस्था के लिए बड़े बड़े देवता, देवदूत व फरिश्ते। मनोरंजन के लिए परियाँ, हुरे, अप्सराएँ जिनका यौवन कभी क्षीण नहीं होता। जिस प्रकार मनुष्य माता पिता के संयोग से पैदा होता है, चूँकि वह बड़ा है तो उसे अधिकार है कि वह किसी युगल को चुन कर किसी के घर में जन्म ले सकता है, उसे अवतार का नाम दिया जाता है। उनके खेल खिलौने भी अजीब अजीब! ये सारे खेल लीलाएँ, माया आदि। कुछ तो इससे भी आगे बढ़ गए, बिना पिता के संसर्ग से कुमारी मरियम के पेट से ईसा की उत्पत्ति अथवा तो खम्बे से नृसिंह। शरीर के मैल में ही देवता बना लिया। परिणाम यह हुई कि ईसाइयों ने कहा ''खुदा का अवतार ईसा था, कृष्ण अथवा राम नहीं। कृष्ण के उपासकों ने कृष्ण को और राम के उपासकों ने राम को अवतार के रूप स्वीकार किया। कृष्ण तो पूरे सोलह कलाओं के अवतार थे और राम केवल मात्र बारह कलाओं का। इसी श्रृंखला में एक अन्य द्वन्दवाद है। एक कहते है ईश्वर निराकार है, दूसरे उसे साकार स्वीकार करते है।

क्योंकि सर्वशक्तिमत्ता के कारण वह आकार भी धारण कर सकता है, कौन सा ऐसा काम है जो वह नहीं कर सकता। इसी प्रकार वह सगुण है या निर्गुण अथवा दोनों। यही धारणाएँ अलग-अलग परमात्मा के स्वरूप को जन्म देती हैं। तो फिर सभी एक हैं? परमात्मा के स्वरूप हिन्दुओं के अलग, मुसलमानों, ईसाइयों व अन्य मत-मतान्तरों के अलग अलग परमात्मा। हो सकता है पशु भी यदि कहीं उसे स्वीकार करते होंगे तो उन्होंने भी अपना जैसा स्वरूप दिया हो सकता है। तो वास्तव में परमात्मा का स्वरूप है क्या? उस प्रश्न का उत्तर यजुर्वेद के 40वें अध्याय के आठवें मन्त्र में बड़े ही सुन्दर शब्दों में-

स पर्यगाच्छुक्रमकाय-मव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम्।
कविर्मनीषी परिभूः स्वं भूयाथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छा-श्वतीभ्यः समाभ्यः।। यजुर्वेद 40/8

अन्वयः स परिअगात्। स शुक्रम्। स अकायम्। स अव्रणम्।
स अपापविद्धम्। स शुद्धम्। स अपापविद्धम्। स कविः। स मनीषी। स परिभूः।
स स्वयंभू। स शाश्वतीभ्यः समाभ्यः अर्थात् याथातथ्यतः। व्यदधात्।।

अर्थः वह परमेश्वर (परिअगात्) हर वस्तु के चारों ओर व्यापक भाव से उपस्थित है। (शुक्रम्) वह संसार की बीज शक्ति है। (अकायम्) कायाधारी नहीं है। (अव्रणम्) वह व्रण आदि रोगों से मुक्त है।

(अस्नाविरम्) नस नाड़ी के बन्धन में जकड़ा हुआ नहीं है। (शुद्धम्) मल रहित, शुद्ध है। (अपापविद्धम्) पाप उसको बींध नहीं सकता। वह (कविः) ज्ञानी है। (मनीषी) विचारवान है। (परिभूः) सब स्थानों को घेरे हुए है। कोई स्थान उससे रिक्त नहीं है। (स्वयंभूः) उसका कोई दूसरा उत्पादक नहीं है, वह स्वयं अपना स्वामी है। (शाश्वीतभ्यः समाभ्यः) अपनी नित्य रहने वाली प्रजाओं के लिए (अर्थात्) पदार्थों का (याथातथ्यत) (यथा स्थात् तथा) ठीक ठीक रीति से (वि-अदधात्) विधान बनाया है।

1. पर्यगात्-उसकी गति हर वस्तु में है। वह हर जगह पहले से ही पहुँचा हुआ है। कोई भी वस्तु उसके अस्तित्व से खाली नहीं। हर जगह व्यापक है इसलिए यह कहना कि वह सूर्य लोक में है सातवें आसमान पर निवास करता है बहिश्त में है दोजख में नहीं फूलों में है मलमूत्र में नहीं। महर्षियों के हृदय में है दुर्जनों में नहीं। गन्दगी प्राकृतिक अवगुण है, ईश्वर पर उसका कोई प्रभाव नहीं। गन्दगी में भी तो जीवाणु कीटाणु निवास करते है तो क्या वहाँ उसकी सत्ता नहीं है। तात्पर्य यह है कि वह हर वस्तु में है। सर्वव्यापक है।

शुक्रम्-शुक्रम् का अर्थ है बीज शक्ति। अथवा तो यूँ कहिए कि वर्तमान विद्यमान पदार्थ का कितना भाग भविष्य में क्या उत्पन्न कर सकता है। बीज में वृक्ष उगा देने की शक्ति निहित है। शुक्र का शुक्रत्व यही है कि उसमें वे सभी चीजें परोक्ष अथवा सूक्ष्म रूप में अभिगुप्त रहती है जिनको अवसर पाकर विकसित होना है। परमात्मा को शुक्र कहा गया है क्योंकि वह उस बीज शक्ति को धारण करने वाला है। उसी बीज शक्ति से सृष्टि का निर्माण एवं पोषण सम्भव है।

3. अकाय-वह काया रहित है अर्थात् प्राकृतिक शरीर वाला नहीं। यहीं से मत मतान्तरों में भावनाएँ भिन्न हो जाती है। यह सब अविद्या के कारण है। भाषा के अलंकारिक स्वरूप को न समझना एक कारण है। रावण के सिर दस, ''सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्'' तो क्या हजार शीर्ष अथवा सिर, हजार आँखो एवं हजार पाँव। तो क्या इसी को ही परमात्मा का स्वरूप मान लिया जाए। इसी प्रकार भक्तजन ईश्वर को अकाय अथवा शरीर रहित मानने को तैयार ही नहीं। उन्हें तो मुरली, मुकुट एवं राम के बाणों का ध्यान करना ही भक्ति है, वही परमात्मा का स्वरूप है।

यदि वह शरीरधारी होता तो परि-अगात् न होता। काया का अर्थ ही सीमित होना है फिर वह सर्वव्यापक नहीं हो सकता।

4. अव्रणम्-काया होगी तभी तो व्रण कहाँ होगें। व्रण का तो शरीर के साथ अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है।

5. अस्नाविरम्-नस नाड़ी से रहित। जब शरीर ही नहीं तो नस नाड़ी होना सम्भव ही नहीं और यदि ऐसा है तो फिर वही उत्तर कि वह सर्वव्यापक हो नहीं सकता। सर्वव्यापक न होता तो हम जैसा पराधीन होता। उपरलिखित लगभग पर्यायवाची शब्द सचेत कर रहे हैं कि जहाँ अथवा जिस वस्तु में काया सम्बन्धी सीमाओं का लवलेश भी प्रतीत हो उसको परमात्मा समझना अपने आप को धोखा होना ही है।

6. शुद्ध-वह परमात्मा शुद्ध स्वरूप है। अशुद्धि काया से ही उत्पन्न होती है। यदि वह अराध्य परमात्मा शुद्ध है तो उपासक भी शुद्ध बनना चाहेगा। उसे भक्त शुद्ध समझता है तो वह अशुद्धता से दूर रहेगा।

7. अपापविद्धम्-पाप उसे बींध नहीं सकता। वास्तव में पाप है क्या? कर्त्तव्य का न करना अपितु अकर्त्तव्य करना। इसका कारण है अविद्या एवं प्रलोभन। किसी वस्तु की चाहत करना, फिर लोभ में फंस कर उसकी प्राप्ति की चेष्टा और फिर पापवृति की ओर अग्रसर होना। हमारे द्वारा ऐसे देवताओं का पूजन किया जाता है जो कि अज्ञान, लोभ, मोह, दम्भादि वृतियों से प्रेरित हो पाप की ओर अग्रसर होते है ऐसे बहुत सी धार्मिक कथाएँ हमारे यहाँ प्रचलित है। इन्हीं देवताओं को हम परमात्मा मानते हैं जिसे परमशुद्ध स्वीकार करते है। यह है विरोधाभास। यदि वह परमात्मा अपापविद्धम है तो हमें स्वीकार करना होगा कि वह शुद्ध है, पाप उस बोंध नहीं सकता। वह काम क्रोध लोभ मोह आदि से अछूता है। वह केवल शुद्ध स्वरूप है।

(क्रमशः)

पृष्ठ 2 का शेष-वैदिक धर्म की रक्षक...

आचार्यों का पोषण, सम्मान व उनकी जीविका पर विशेष ध्यान देना चाहिये। संस्कृत का कोई भी विद्वान व आचार्य उपेक्षित नहीं होना चाहिये। गुरुकुलों में शिक्षित योग्य विद्वान आचार्यों को गुरुकुलों में रखकर ब्रह्मचारियों को संस्कृत का योग्यतम विद्वान बनाने का प्रयत्न करना चाहिये और उनसे धर्मोपदेश सहित अनेक विषयों पर लेखन व शोधपूर्ण पुस्तकें लिखवानी चाहियें जिससे उनकी विद्या सफल होकर देश व समाज में वेदों का प्रभावशाली प्रचार व प्रचार हो सके।

धर्म प्रचार की दृष्टि से वर्तमान काल संक्रामण काल कहा जा सकता है। आज हमारा प्रचार व प्रसार आर्यसमाज मन्दिरों की चार दिवारी, इसके सत्संगों व उत्सवों तक ही सीमित हो गया है। हमारे विद्वानों को विद्यालयों व विश्वविद्यालयों में जाकर वेद के विषयों की आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता, उपयोगिता व सार्थकता पर भी चर्चा करनी चाहिये। योग एवं आयुर्वेद का प्रचार भी किया जाना चाहिये। योगमय जीवन ही वैदिक जीवन है। इसको अपना कर ही मनुष्य अपनी सर्वांगीण उन्नति कर सकता है। कोई भी आधुनिक विद्या व ज्ञान हेय नहीं है परन्तु आधुनिक ज्ञान के साथ हमें वेदों का ज्ञान होना चाहिये।

इसके साथ हम ईश्वर स्तुति-प्रार्थना-उपासना व यज्ञ से भी जुड़े हुए होने चाहियें। ऐसा जीवन ही इस जीवन व परजन्म में हमें सुख व शान्ति दे सकता है। अत: सत्यार्थप्रकाश एवं अन्य ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का अध्ययन करते हुए हम वेद एवं समस्त वैदिक साहित्य के अध्ययन से जुड़े रहें और अपनी योग्यता व क्षमता से लेखन व मौखिक प्रचार द्वारा वैदिक धर्म व संस्कृति का प्रचार करते रहें। गुरुकुलीय शिक्षा से अधिक से अधिक वेदों के विद्वान उत्पन्न किये जाने चाहियें। ऐसे ब्रह्मचारी जो वैदिक धर्म व संस्कृति की रक्षा का व्रत लें वही आर्यसमाज की रीढ़ का काम कर सकते हैं। इनको आर्यसमाज में सम्मान व रक्षण मिलना चाहिये। ऐसा होने पर ही विद्वान वेदों का कार्य करेंगे। हमने गुरुकुल के उद्देश्य विषयक कुछ चर्चा की है। इस विषय में पाठक अनेक प्रकार के सुझाव दे सकते हैं।

योग-ध्यान, साधना शिविर

जम्मू काश्मीर की सुरम्य एवं मनोरम पहाड़ियों में स्थित आनन्दधाम आश्रम (गढ़ी आश्रम) उधमपुर, जम्मू कश्मीर में आश्रम के मुख्य संरक्षक एवं निदेशक पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी की अध्यक्षता एवं पूज्य मां सत्यप्रियायतिजी के सान्निध्य में दिनांक 15 से 21 अप्रैल 2019 तक नि:शुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि का क्रियात्मक अभ्यास कराया जाऐगा। इस अवसर पर वैदिक प्रवचन तथा योगदर्शन एवं उपनिषदादि पर भी व्याख्यान होंगे। शिविर में आचार्य आत्मन् जी, वैदिक प्रवक्ता श्री अखिलेश भारतीय जी, स्वामी नित्यानन्दजी, महात्मा रामभिक्षुजी आदि अन्य अनेक विद्वान् भी पधार रहे हैं। इस अवसर पर पूज्य चैतन्यमुनिजी के ब्रह्मत्व में प्रतिवर्ष की भान्ति सामवेद पारायण-यज्ञ का आयोजन भी किया गया है। शिविर में साधक अपनी शंकाओं का समाधान भी कर सकेंगे। आश्रम में पूज्य स्वामी जी के सान्निध्य में पहले लगाए गए शिविरों में शिविरार्थियों के बहुत अच्छे अनुभव रहे हैं इसलिए साधकों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है अत: इच्छुक साधक अपना स्थान आरक्षित करने के लिए फोन नं० 09419107788, 09419796949 व 09419198451 पर तुरन्त सम्पर्क करें।

-भारतभूषण आनन्द, आश्रम ट्रस्ट प्रधान

ऐसे थे मेरे स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी

लेखक-शास्त्री जोगेन्द्र पाल मन्त्री आर्य समाज धारीवाल

हम सब स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के जीवन के बारे में अच्छी तरह जानते हैं। उनकी दिनचर्या, खान-पान, रहन-सहन, उनके मुख से निकला हुआ एक-एक शब्द हम सब के लिये प्रेरणा दायक था, या कहें कि जिस प्रकार मिशरी की डली जिस तरफ से भी चखें वो मिठी ही होगी उसी प्रकार पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी का जीवन था। स्वामी जी का जीवन आर्य जगत के उच्च सन्यासियों में से एक था। स्वामी सर्वानन्द जी के चरणों में मैं लगभग 28 वर्ष रहा हूँ उनके जीवन का एक एक क्षण शिक्षाप्रद होता था। स्वामी जी का जीवन ऐसा पवित्र था। आप अनुमान लगा सकते हैं कि उनके गुरु का जीवन कितना पवित्र होगा। स्वामी सर्वानन्द जी कहा करते थे कि महर्षि दयानन्द के बाद ऐसा बलशाली, विद्वान, तपोनिष्ठ, दृढ़ संकल्पी, योद्धा सन्यासी मैंने नहीं देखा। स्वामी सर्वानन्द जी की अपने गुरु के प्रति अगाध श्रद्धा थी।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी दृढ़ संकल्पी थे, उन्होंने अपने जीवन में जो संकल्प ले लिया उससे वे रति-भर भी पीछे नहीं हटते थे। उन्होंने संकल्प ले रखा था कि मैं दिन में 12 बजे ही भोजन करूंगा और उसको उन्होंने जीवनभर निभाया। उसके लिये उनको तीन-तीन तक भूखा रहना पड़ा। उससे वो टस से मस नहीं हुये। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी दूरदर्शी महान सन्यासी थे। एक बार स्वामी सर्वानन्द (पूर्व पं० राम चन्द्र जी) जी ने स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को कहा कि स्वामी जी मठ में आमदन का कोई साधन नहीं, बड़ी मुश्किल से गुजारा हो रहा है। मठ में कुछ आदमी निठ्ठले पड़े रहते हैं उनको मठ छोड़ने के लिये कहा जाये स्वामी सर्वानन्द जी का इशारा महाशय कुन्दनलाल की तरफ था। यह उन दिनों की बात जब मठ की अभी स्थापना भी नहीं हुई थी। तो स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने बड़े सहज स्वभाव से कहा कि पं० जी यह व्यक्ति बड़े काम का है। मठ के लिये बड़ा उपयोगी सिद्ध होगा वास्तव में आगे चलकर महाशय कुन्दन लाल जी मठ के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुये। बाद में स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने उनके कार्यों को देखकर उन से प्रभावित होकर महाशय कुन्दनलाल जी को आर्य मुसाफिर की उपाधि से नवाजा जो वैदिक धर्मी के लिये संसार के बड़े से बड़े युनिवर्सिटी की उपाधि से बड़ी है। ऐसे थे मेरे स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी जिनका जन्म दिन दयानन्द मठ दीनानगर में बड़े उत्साह एवं श्रद्धा से 21-1-19 को मनाया। पहले एक सप्ताह दीनानगर शहर में प्रभात फेरियां निकाली गई। सैकड़ों नगर निवासियों ने प्रभात फेरियों में शामिल होकर स्वामी जी के प्रति श्रद्धा प्रकट की। 20-1-2019 को दयानन्द मठ घण्डरां हिमाचल प्रदेश में तथा 21-1-2019 को दीनानगर में जन्म दिन मनाया गया जिस में शास्त्री जोगेन्द्र पाल, प्रिं० तुली साहिब तथा स्वामी सदानन्द जी महाराज जी ने स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डाला।

पृष्ठ 8 का शेष-आर्य समाज नवांशहर...

विद्यार्थियों में भरी जाए ऐसा हमें प्रयास करना चाहिये। इस अवसर पर कालेज की सचिवा श्रीमती मीनाक्षी शर्मा, आर्य समाज के मंत्री श्री जिया लाल, कोषाध्यक्ष श्री कुलवन्त राय शर्मा, श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल, श्री ललित मोहन पाठक, ललित शर्मा, भास्कर पाठक, श्रीमती आशा शर्मा, प्रधानाचार्य एसीटी कालेज श्रीमती इन्दिरा वर्मा श्री अक्षय तेजपाल, श्री अमित शर्मा, बी.एल.एम.गर्ल्ज कालेज की प्रधानाचार्य श्रीमती तरुणप्रीत वालिया, आर.के.आर्य कालेज के प्रधानाचार्य श्री एस.के. डाबर, व सचिव श्री जे.के.दत्ता, डब्ल्यूएल सीनियर सैकेंडरी स्कूल की प्रधानाचार्य श्रीमती आरती कालिया, कालेज के प्राध्यापक व शिक्षार्थी व अन्य भी गणमान्य उपस्थित थे।

-अमित शास्त्री पुरोहित

आर्य समाज नवांशहर के तत्वावधान में बसन्त पंचमी पर्व श्रद्धा व उत्साह से मनाया

आर्य समाज नवांशहर के तत्वावधान में वसन्त पंचमी का पर्व श्रद्धा व उत्साह से मनाया गया। इस अवसर पर हवन यज्ञ में आहुतियां प्रदान करते हुये आर्य जन। चित्र दो में डी.एन.कालेज आफ एजुकेशन की गायत्री स्मारिका का विमोचन करते हुये आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी, कालेज के प्रधान श्री विनोद भारद्वाज जी एवं अन्य।

आर्य समाज नवांशहर के तत्वावधान में नवांशहर की समस्त शिक्षण संस्थाओं ने मिल कर (डी.ए.एन कालेज) बी.एड. कालेज नवांशहर में बसन्त पंचमी व बाल हकीकत राय का बलिदान दि वस बड़ी श्रद्धा व उत्साह से मनाया गया। सर्वप्रथम यज्ञ का आयोजन हुआ जिसमें कालेज की प्रधानाचार्य श्रीमती गुरविन्द्र कौर जी ने यजमान पद पर सुशोभित होकर यज्ञ श्रद्धा सहित अमित शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न करवाया। यज्ञ के उपरान्त कालेज की छात्राओं ने प्रभु भक्ति का भजन गाया। तत्पश्चात पंडित अमित शास्त्री जी ने पर्व परिचय करवाते हुये कहा कि पर्व हमारी संस्कृति के साथ हमें उन्नत होने का उपदेश देते हैं वहीं उपदेश हमारी संस्कृति की गहराई को दर्शाते हैं। तभी तो बाल हकीकत राय जैसे बलिदानी धर्म पर बलिदान हो जाते हैं। तत्पश्चात कालेज की प्रधानाचार्या जी ने इस कार्यक्रम में पधारे हुये मेहमानों का सुस्वागत व धन्यवाद किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि हमें बाल हकीकत राय जी से प्रेरणा लेकर अपने बच्चों को वैदिक शिक्षा की ओर प्रेरित करना चाहिये तभी तो हम विश्व गुरु बन सकते हैं। उन्होंने कहा कि आयु की दृष्टि से वीर हकीकत छोटे थे परन्तु अपने धर्म के प्रति उत्सर्ग का ऊंचा भाव निज बलिदान द्वारा जो प्रस्तुत किया वह किसी भी स्वाभिमानी व्यक्ति के लिए अत्यन्त प्रेरणा देने वाला है। वीर हकीकत को डराया गया, धमकाया गया, प्रलोभन दिए गए, अपना धर्म छोड़ने के लिए मजबूर करने की कोशिश की गई परन्तु वीर हकीकत उनके भय और प्रलोभन से जरा भी विचलित नहीं हुए। इस पावन बेला पर कालेज के प्रधान श्री विनोद भारद्वाज जी ने शिक्षा की महत्ता को और उज्जवल करने की प्रेरणा **(शेष पृष्ठ सात पर)**

धर्म की खातिर वीर हकीकत राय बलिदान हुये

आर्य समाज मंदिर शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में बसन्त पंचमी के अवसर पर मुख्य यजमान मृणाल मल्होत्रा एवं श्रीमती जसमीन मल्होत्रा और आर्य समाज के महामंत्री हर्ष लखनपाल एवं श्रीमती प्रवीण लखनपाल यज्ञ में आहुतियां प्रदान करते हुये जबकि चित्र दो में विराजमान आर्यजन।

आर्य समाज मंदिर शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में बसन्त पंचमी महोत्सव कार्यक्रम के अवसर पर यज्ञ, प्रवचन, भजन का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य यजमान मृणाल मल्होत्रा एवं श्रीमती जसमीन मल्होत्रा और आर्य समाज के महामंत्री हर्ष लखनपाल एवं श्रीमती प्रवीण लखनपाल बने। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सुप्रसिद्ध विद्वान पंडित सुरेश शास्त्री जी ने पवित्र पावन वेद मंत्रों से यज्ञ सम्पन्न करवाया। प्रसिद्ध भजनोपदेशक रवि जी ने बहुत ही सुन्दर मर्यादा पुरुषोत्तम राम और वीर हकीकत राय के जीवन पर भजन सुना कर सब को मंत्रमुग्ध कर दिया। आर्य समाज के प्रधान श्री रणजीत आर्य जी ने बसन्त पंचमी महोत्सव पर सब को बधाई देते हुये कहा कि आज के दिन बाल वीर हकीकत राय 14 वर्ष की आयु में अपने सहपाठी मुस्लिम समुदाय ने हिन्दू धर्म के विरूद्ध अपशब्द कहे। इस पर बाल वीर हकीकत राय ने अपने सहपाठी से कहा कि यदि मैं यही शब्द फातिमा बीबी के लिये कहूं तो आप को बुरा लगेगा लेकिन उस समय मुस्लिम समुदाय ने इस बात को बहुत मजहबी रंग दे दिया और बाल हकीकत को बलिदान देना पड़ा। उन्होंने वीर हकीकत राय को कहा कि अगर तुम मुस्लिम धर्म अपना लो तो आप को माफ कर दिया जायेगा लेकिन उन्होंने अपनी संस्कृति को, अपने वैदिक धर्म को नहीं छोड़ा और अपने धर्म की रक्षा करते हुये बलिदान दे दिया लेकिन उन्होंने अपना धर्म नहीं बदला। श्री सुरेश शास्त्री जी ने कहा कि यज्ञवेदी पर जो दम्पत्ति यजमान बनते हैं वह बहुत ही सौभाग्यशाली होते हैं। इस अवसर पर सतपाल मल्होत्रा, भूपेन्द्र उपाध्याय, श्रीमती सीता मल्होत्रा, ओम मल्होत्रा, ईश्वर चन्द्र रामपाल, श्री ओम प्रकाश मेहता, श्री संदीप अरोडा, श्रीमती गीतिका अरोडा, चौधरी हरिश्चन्द्र, श्री सुरेन्द्र अरोडा, श्री विजय चावला, पूनम मेहता, उर्मिल भगत, सुभाष मेहता, श्री अनिल मिश्रा, उर्मिल शर्मा, श्री अशोक धीर, श्री केदारनाथ शर्मा, श्री बैजनाथ, श्री रविन्द्र आर्य, श्री राजीव शर्मा, श्री अर्चना मिश्रा, श्री प्रवीण शर्मा, उमेश बत्रा, हितेश स्याल, सुरेश ठाकुर, प्रिया मिश्रा, दिव्या आर्य, अनु आर्या, सुभाष आर्य, इन्दु आर्य, श्री सुशील शर्मा, श्री ललित मोहन कालिया, श्रीमती सुनीता शर्मा, ज्योति सिंह, श्री राघव मल्होत्रा, श्री नरेन्द्र कुमार, श्री सुदर्शन आर्य, डालिया शर्मा, चारू शर्मा, स्नेहलता कालिया, सारिका मल्होत्रा, आरती मल्होत्रा, अंजू शर्मा, सोमांश अरोडा, दिविता अरोड़ा, रितेश मनु व अन्य नगर निवासियों ने भाग लिया। **रणजीत आर्य प्रधान**

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।